SHIKSHA SAMVAD
International Journal of Multidisciplinary Research
ISSN: 2584-0983 (Online)
© Shiksha Samvad|Volume-03| Issue-03| March- 2026
Available online at: https://shikshasamvad.com/
DOI:- https://doi.org/10.64880/shikshasamvad.v3i3.09

संकाय के आधार पर बी0एड0 स्तर के विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि तथा समायोजन के मध्य सह–सम्बन्ध

डॉ0 विवेक कुमार
Email: vivekkumar.vk394@gmail.com

सारांश

*प्रस्तुत अध्ययन में **"संकाय के आधार पर बी0एड0 स्तर के विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि तथा समायोजन के मध्य सह–सम्बन्ध"** है। प्रस्तुत अध्ययन कार्य में वर्णनात्मक अनुसंधान के अन्तर्गत सहसम्बन्धात्मक सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है। प्रस्तुत अध्ययन कार्य में जनसंख्या का आशय प्रयागराज जनपद के सभी शिक्षक–प्रशिक्षण संस्थानों में पढ़ने वाले विद्यार्थी है। प्रस्तुत अध्ययन हेतु न्यादर्श का चयन प्रयागराज जनपद के शिक्षक–प्रशिक्षण महाविद्यालयों में से किया है। इन महाविद्यालयों के बी0एड0 स्तर के समस्त छात्र समष्टि है तथा शोध अध्ययन के लिए चयनित विद्यार्थी न्यादर्श है। प्रयागराज जनपद के 2 शिक्षक–प्रशिक्षण महाविद्यालयों में से कुल 120 विद्यार्थियों (छात्र एवं छात्राओं) का चयन किया गया है। उपकरण के रूप में संवेगात्मक बुद्धि मापन हेतु डा0 एस0के0 मंगल एवं श्रीमती सुभ्रा मंगल द्वारा निर्मित संवेगात्मक बुद्धि मापनी तथा समायोजन के मापन हेतु डा0 रामजी श्रीवास्तव एवं डा0 बीना श्रीवास्तव द्वारा निर्मित समायोजन प्रश्नावली पुस्तिका का प्रयोग किया गया है। प्रदत्तों के विश्लेषण हेतु सह–सम्बन्ध गुणांक (कार्ल पियर्सन गुणन आर्घूण) विधि का प्रयोग किया गया है। अध्ययन के निष्कर्ष– बी0एड0 स्तर के विद्यार्थी की संवेगात्मक बुद्धि एवं समायोजन के मध्य सह–सम्बन्ध के अध्ययन की ओर उन्मुख रहा। इस प्रयास में विज्ञान एवं कला वर्ग के विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि तथा समायोजन के मध्य सह–सम्बन्ध को जाँचा गया। समग्र विद्यार्थियों, बालक, बालिका, कला, विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों की संवेगात्मक एवं समायोजन के मध्य सह–सम्बन्ध भी पाया गया। यह स्पष्ट हो चुका है कि संवेगात्मक बुद्धि तथा समायोजन के बीच सह–सम्बन्ध होने से व्यक्ति अपने कार्य में, जीव क्षेत्र में, अत्यधिक सफल हो सकता है तथा एक सम्यक् तथा सुचारू जीवन व्यतीत कर सकता है। इनके मध्य धनात्मक सह–सम्बन्ध होने से समाज तथा व्यक्ति दोनों को लाभ होता है। व्यक्ति का व्यक्तिगत विकास तो होती ही है साथ ही सामाजिक विकास भी होता है। शिक्षक जो कि समाज का महत्त्वपूर्ण अंग होता है उसकी विशेष जिम्मेदारी बनती है कि वह किशोर विद्यार्थियों को सही दिशा दे वह अपने ज्ञान कोश का सही से प्रचार–प्रसार करें तो आने वाली पीढ़ी देश की उन्नति में उच्चतम योगदान दे सकेगी।*

मुख्य शब्द– शिक्षक–प्रशिक्षण संस्थान, बी0एड0, विद्यार्थी, संवेगात्मक बुद्धि, समायोजन क्षमता, सहसम्बन्ध

प्रस्तावना– सामाजीकरण की प्रक्रिया में बालक में पारस्परिक प्रेम, सहयोग, त्याग, अधिकार, बलिदान, सेवा, कर्त्तव्यनिष्ठा आदि सद्‌गुण जन्म लेते है, किन्तु समाज में नकारात्मक विचारधारा पनप रही होती है तो बालक में घृणा, विध्वंस, क्रोध, अपराधी प्रवृत्तियाँ जन्म लेती है और बालक अपने संवेगों पर नियंत्रण खो देता है और बालक में विध्वंसात्मक प्रवृत्तियाँ जन्म लेती है। वह समाज में रहकर समाज को नुकसान पहुँचाने का यत्न करने लगता है।

बालक कुछ मूल प्रवृत्तियों के साथ जन्म लेता है और प्रत्येक मूल प्रवृत्ति किसी न किसी संवेग से सम्बद्ध होती है जैसे पलायन एक मूल प्रवृत्ति है उससे भय का संवेग जुड़ा हुआ है, संवेगों का समन्वयीकरण करना मानव जीवन के लिए अति आवश्यक है क्योंकि यदि संवेग हमारे ऊपर हाबी हो जाते है तो हम अर्थ का अनर्थ कर बैठते है। संवेगों को सम्यक् स्थित में रखना महत्त्वपूर्ण है हालांकि हम संवेगों के माध्यम से ही विभिन्न क्रियाकलापों का सम्पादन करते है, परन्तु अपने संवेगों को नियन्त्रित करना जरूरी है।

संवेग वास्तव में व्यक्ति के आन्तरिक भावों की अचानक तीव्र तथा विवेक प्रक्रिया के नियन्त्रण से मुक्त व्यवहार के परिलक्षित होने की स्थित को व्यक्त करता है। यह मानसिक उपद्रव की अवस्था होती है जिससे व्यक्ति सामान्य स्थित में नही रहता है। संवेगात्मक स्थित में बुद्धि व विवेक का व्यक्ति के व्यवहार पर अंकुश नहीं रहता है तथा उसे उचित अनुचित का ज्ञान नही रहता है।

समायोजन को सामन्जयस्य, व्यवस्थापना या अनुकूलन भी कहते है। समायोजन दो शब्दों को मिलाकर बना है– सम+आयोजन।

सम का अर्थ है भली–भाँति, अच्छी तरह या समान रूप से और आयोजन का अर्थ है व्यवस्था अर्थात् अच्छी तरह से व्यवस्था करना।

अतः समायोजन का अर्थ हुआ – सुव्यवस्था या अच्छे ढंग से परिस्थितियों को अनुकूल बनाने की प्रक्रिया जिससे कि व्यक्ति की आवश्यकताएँ पूरी हो जाए मानसिक द्वन्द न उत्पन्न हो पाये। इस सत्य से इंकार नहीं किया जा सकता कि अन्य प्राणियों की भाँति मनुष्य की अनेक आवश्यकताएँ होती है। यही आवश्यकताएँ ही व्यक्ति को लक्ष्य प्राप्ति की ओर प्रेरित करती है और वह आगे बढ़ता है। जब व्यक्ति को अपने लक्ष्य की प्राप्ति सरलता से हो जाती है तो उसे सन्तोष का अनुभव होता है किन्तु जब लक्ष्य प्राप्ति करने में उसे बाधाओं का सामना करना पड़ता है तो उसे एक अप्रिय अनुभूति होती है। जिसे कुण्ठा, असन्तोष, हताशा, निराशा कहते है। इसी प्रकार जब व्यक्ति अपनी इच्छाओं और रूचियों के प्रतिकूल शक्तियों का सामना करना पड़ता है तो उसके अन्दर मानसिक द्वन्द्व उत्पन्न हो जाता है। इस प्रकार कुण्ठा और मानसिक द्वन्द के परिणामस्वरूप व्यक्ति में मानसिक तनाव उत्पन्न होता है तनाव के कारण व्यक्ति के मन में एक प्रकार की उथल–पुथल मच जाती है। जिसे दूर करने के लिए वह बाधाओं को दूर करने में सफल रहा तो वह वातावरण के साथ समायोजन स्थापित कर लेता है। वहीं व्यक्ति यदि बाधाओं को दूर करने में असमर्थ रहा और उसने आवांछनीय मार्ग को अपना लिया तो कुसमायोजन उत्पन्न हो जाता है। साधारणतया समायोजन की यह प्रक्रिया जीवनकाल में निरन्तर चलती रहती है। समायोजन को परिभाषित करते हुए एल0एस0 शेफर महोदय ने कहा है– *''समायोजन वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा कोई जीवधारी अपनी आवश्यकताओं तथा इन आवश्यकताओं की सन्तुष्टि से सम्बन्धित परिस्थितियों में संतुलन बनाये रखता है।''*

एक अन्य तथ्य पर विचार करना आवश्यक है। अपने संवेगों के साथ–साथ हमें अपने सम्पर्क में आने वाले व्यक्तियों के संवेगों को समझना भी आवश्यक है, चूँकि हम शिक्षक की भूमिका में समाज में स्थापित होने जा रहे हैं तो

© Shiksha Samvad| Received: 03 March-2026 | Accepted: 10 March- 2026 | Published: 15 March- 2026

हमें छात्रों के साथ अन्तःक्रिया करनी होगी उनके संवेगों को समझना होगा, यदि वे विध्वंसात्मक कार्यों में रूचि लेते है तो उन परिस्थितियों को समझना होगा जिस कारण वह ऐसा कर रहे है, न कि डॉटकर उन्हें दबाना होगा।

आधुनिक समाज बहुत बुद्धिजीवी है परन्तु उनमें संवेगों को समझने तथा अपने संवेगों को नियन्त्रित करने की क्षमता का अभाव दृष्टिगोचर हो रहा है। बुद्धि के एक प्रकार में तो वह बहुत उच्च स्तर तक पहुँच चुके है जैसे यदि कोई वैज्ञानिक अपनी तकनीकी क्षमता के बल पर पर बहुत अच्छी मारक क्षमता का हथियार बनाता है, परन्तु उसका उपयोग समाज की विध्वसांत्मक गतिविधियों में करता है इससे स्पष्ट होता है कि उसमें संज्ञानात्मक विकास बहुत उच्च स्तर तक हो गया है परन्तु संवेगात्मक बुद्धि का विकास नही हो पाया है। इस कारण वह अपने नकारात्मक संवेगों को नियंत्रित नहीं कर सका तथा अन्य लोगों के संवेगों को भी नहीं समझ सका। इस परिप्रेक्ष्य में यदि ओसामा बिन लादेन का उदाहरण लिया जाय तो अत्यन्त सटीक प्रतीत होता है। यदि उसके व्यक्ति में संवेगात्मक बुद्धि का प्रभाव होता तो वह अपनी तकनीकी क्षमता उपयोग का उपयोग सकारात्मक कार्यों में करता और एक प्रतिष्ठित साफ्टवेयर इंजीनियर के रूप में प्रसिद्ध होता तथा विश्व को अपनी सेवाओं से लाभान्वित करता। परन्तु संवेगात्मक बुद्धि के अभाव में वह एक क्रूर व्यक्ति के रूप में कुख्यात हुआ जो सम्पूर्ण विश्व का दुर्भाग्य रहा।

आज के समाज में एक दूसरे के भावों की समक्ष का ह्रास होता जा रहा है। व्यक्ति अपने निजी स्वार्थों में इतना तल्लीन है कि उसे किसी की भावनाओं से कोई मतलब नहीं रहा। वह अपने निजी स्वार्थ के लिए किसी का कितना भी नुकसान कर सकता है चाहे उसे क्षणिक लाभ ही क्यों न हो।

संवेगात्मक बुद्धि से सम्बन्धित विभिन्न शोधों का अध्ययन करने के पश्चात् मैंने इस पक्ष पर ध्यान केन्द्रित किया कि संवेगात्मक बुद्धि के साथ–साथ समायोजन को जानना भी नितान्त आवश्यक है। अतः इस प्रकार हम कह सकते है समायोजन में संवेगात्मक बुद्धि के महत्त्व को समझना होगा तथा यह देखना होगा कि संवेगात्मक बुद्धि का प्रभाव समायोजन पर किस प्रकार पड़ता है तथा इन दोनों के मध्य क्या सम्बन्ध है। इसके द्वारा अपने व्यक्तित्व के विकास से हम समाज में अपनी भूमिका का सही निर्वहन कर सकेगें तथा अपना जीवन सार्थक बना सकेंगे।

अतः इस विषय पर शोध करने के अत्यन्त दूरगामी लाभ संदेह से परे है। इसी दिशा में अध्ययनकर्ता ने विनम्र प्रयास किया है।

समस्या कथन–

''संकाय के आधार पर बी0एड0 स्तर के विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि तथा समायोजन के मध्य सह–सम्बन्ध का अध्ययन।''

अध्ययन का उद्देश्य–

1. बी0एड0 स्तर के विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि एवं समायोजन के मध्य सहसम्बन्ध का अध्ययन।
2. बी0एड0 स्तर के कला वर्ग के विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि एवं समायोजन के मध्य सहसम्बन्ध का अध्ययन।

परिकल्पना

1. बी0एड0 स्तर के विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि एवं समायोजन के मध्य कोई सार्थक सह–सम्बन्ध नहीं होता है।
2. बी0एड0 स्तर के कला वर्ग के विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि एवं समायोजन के मध्य कोई सार्थक सह–सम्बन्ध नहीं होता है।

© Shiksha Samvad| Received: 03 March-2026 | Accepted: 10 March- 2026 | Published: 15 March- 2026

शोध विधि–

प्रस्तुत अध्ययन कार्य में वर्णनात्मक अनुसंधान के अन्तर्गत सहसम्बन्धात्मक सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

जनसंख्या–

प्रस्तुत अध्ययन कार्य में जनसंख्या का आशय प्रयागराज जनपद के सभी शिक्षक–प्रशिक्षण संस्थानों में पढ़ने वाले विद्यार्थी है।

न्यादर्श–

प्रस्तुत अध्ययन हेतु न्यादर्श का चयन प्रयागराज जनपद के शिक्षक–प्रशिक्षण महाविद्यालयों में से किया है। इन महाविद्यालयों के बी0एड0 स्तर के समस्त छात्र समष्टि है तथा शोध अध्ययन के लिए चयनित विद्यार्थी न्यादर्श है। प्रयागराज जनपद के 2 शिक्षक–प्रशिक्षण महाविद्यालयों में से कुल 120 विद्यार्थियों (छात्र एवं छात्राओं) का चयन किया गया है।

प्रयुक्त उपकरण–

प्रस्तुत अध्ययन में बी0एड0 स्तर के विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि तथा समायोजन क्षमता के मध्य सह–सम्बन्ध ज्ञात करने के लिए दो प्रकार की मापनियों का प्रयोग किया गया है–

1. संवेगात्मक बुद्धि मापन हेतु डा0 एस0के0 मंगल एवं श्रीमती सुभ्रा मंगल द्वारा निर्मित संवेगात्मक बुद्धि मापनी।
2. समायोजन के मापन हेतु डा0 रामजी श्रीवास्तव एवं डा0 बीना श्रीवास्तव द्वारा निर्मित समायोजन प्रश्नावली पुस्तिका का प्रयोग किया गया है।

प्रयुक्त सांख्यिकीय विधि–

1. सह–सम्बन्ध गुणांक (कार्ल पियर्सन गुणन आर्घूण) विधि–

$$r = \frac{N\sum xy - \sum x.\sum y}{\sqrt{\left[N\sum x^2 - (\sum x)^2\right]\left[N\sum y^2 - (\sum y)^2\right]}}$$

जहाँ x तथा y मूल प्राप्तांक हैं एवं x^2 तथा y^2 क्रमशः x तथा y प्राप्तांकों के वर्ग है।

Σx = x प्राप्तांकों का योग

Σy = y प्राप्तांकों का योग

Σx^2 = x प्राप्तांकों के वर्गों का योग

Σy^2 = y प्राप्तांकों के वर्गों का योग

Σxy = x तथा y प्राप्तांकों के गुणनफलों का योग

N = व्यक्तियों की संख्या

परिकलित सहसम्बन्ध गुणांक की सार्थकता का निर्धारण करने के लिए 0.05 सार्थकता स्तर पर द्वि–पुच्छीय परीक्षण का प्रयोग किया गया।

प्रदत्तों का विश्लेषण एवं व्याख्या–

परिकल्पना संख्या–1

''बी0एड0 स्तर के विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि एवं समायोजन के मध्य कोई सार्थक सह–सम्बन्ध नहीं होता है।''

© Shiksha Samvad| Received: 03 March-2026 | Accepted: 10 March- 2026 | Published: 15 March- 2026

परिकल्पना के परीक्षण हेतु बी0एड0 स्तर के विज्ञान वर्ग विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि तथा समायोजन के अलग–अलग प्राप्तांक प्राप्त करके उनके बीच सह–सम्बन्ध की सार्थकता की जाँच के लिए कार्ल पियर्सन गुणन आघूर्ण सह–सम्बन्ध विधि (Product Moment Correlation) का प्रयोग किया गया। इस सन्दर्भ में परिगणित मूल तालिका संख्या 1 में प्रदर्शित है–

तालिका सं0 1

बी0एड0 स्तर के विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि तथा समायोजन के मध्य सह–सम्बन्ध के परिगणित मूल

परिगणित मूल	बी0एड0 स्तर के विज्ञान वर्ग के विद्यार्थी	
	संवेगात्मक बुद्धि (X)	समायोजन (Y)
ΣX & ΣY	4106	20276
ΣX^2 & ΣY^2	28581	6900056
ΣXY	1396562	
N	60	
r	0.591	
स्वतन्त्रांश (df)	58	
सार्थकता स्तर (5%)	0.250	
अन्तर	0.591>0.250 (सार्थक)	
परिकल्पना	अस्वीकृत	

तालिका संख्या 1 के अवलोकन से स्पष्ट है कि बी0एड0 स्तर के विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों की सांवेगिक बुद्धि के प्राप्तांकों का कुल योग 4106 है जिसे ΣX से प्रदर्शित किया गया है। वही समायोजन प्राप्तांकों का योग 20276 है जिसे ΣY से प्रदर्शित किया गया है। संवेगात्मक बुद्धि बुद्धि प्राप्तांकों का वर्ग करके योग करने पर 28581 प्राप्त हुआ जिसे ΣX^2 से प्रदर्शित किया गया है। वही समायोजन प्राप्तांकों का वर्ग करके योग करने पर 6900056 प्राप्त हुआ जिसे ΣY^2 से प्रदर्शित किया गया है। संवेगात्मक तथा समायोजन प्राप्तांकों का गुणा करके कुल योग के रूप में 1396562 प्राप्त हुआ जिसे ΣXY से प्रदर्शित किया गया है। जिसके पश्चात् कार्ल पियरसन का गुणन आघूर्ण सह–सम्बन्ध गुणांक की गणना की गई जिससे r का मान 0.591 प्राप्त हुआ जो कि 58 स्वतन्त्रांश (df) के लिए 5% सार्थकता स्तर पर तालिका मूल 0.250 से अधिक है अर्थात् अन्तर सार्थक है। अतः परिकल्पना अस्वीकृत हुई। इस आधार पर कहा जा सकता है कि बी0एड0 स्तर के विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि तथा समायोजन के मध्य सार्थक सह–सम्बन्ध होता है।

परिकल्पना संख्या–2

''बी0एड0 स्तर के कला वर्ग के विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि एवं समायोजन के मध्य कोई सार्थक सह–सम्बन्ध नहीं होता है।''

परिकल्पना के परीक्षण हेतु बी0एड0 स्तर के कला वर्ग विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि तथा समायोजन के अलग–अलग प्राप्तांक प्राप्त करके उनके बीच सह–सम्बन्ध की सार्थकता की जाँच के लिए कार्ल पियर्सन गुणन आघूर्ण सह–सम्बन्ध विधि (Product Moment Correlation) का प्रयोग किया गया। इस सन्दर्भ में परिगणित मूल तालिका संख्या 2 में प्रदर्शित है–

तालिका सं0 2

बी0एड0 स्तर के कला वर्ग के विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि तथा समायोजन के मध्य सह–सम्बन्ध के परिगणित मूल

परिगणित मूल	बी0एड0 स्तर के कला वर्ग के विद्यार्थी	
	संवेगात्मक बुद्धि (X)	समायोजन (Y)
ΣX & ΣY	3939	20494
ΣX^2 & ΣY^2	265419	7069578
ΣXY	1360952	
N	60	
r	0.721	
स्वतन्त्रांश (df)	58	
सार्थकता स्तर (5%)	0.250	
अन्तर	0.712>0.250 (सार्थक)	
परिकल्पना	अस्वीकृत	

तालिका संख्या 2 के अवलोकन से स्पष्ट है कि बी0एड0 स्तर के कला वर्ग के विद्यार्थियों की सांवेगिक बुद्धि के प्राप्तांकों का कुल योग 3939 है जिसे ΣX से प्रदर्शित किया गया है। वही समायोजन प्राप्तांकों का योग 20494 है जिसे ΣY से प्रदर्शित किया गया है। संवेगात्मक बुद्धि बुद्धि प्राप्तांकों का वर्ग करके योग करने पर 265419 प्राप्त हुआ जिसे ΣX^2 से प्रदर्शित किया गया है। वही समायोजन प्राप्तांकों का वर्ग करके योग करने पर 7069578 प्राप्त हुआ जिसे ΣY^2 से प्रदर्शित किया गया है। संवेगात्मक तथा समायोजन प्राप्तांकों का गुणा करके कुल योग के रूप में 1360952 प्राप्त हुआ जिसे ΣXY से प्रदर्शित किया गया है। जिसके पश्चात् कार्ल पियरसन का गुणन आघूर्ण सह–सम्बन्ध गुणांक की गणना की गई जिससे r का मान 0.712 प्राप्त हुआ जो कि 58 स्वतन्त्रांश (df) के लिए 5% सार्थकता स्तर पर तालिका मूल 0.250 से अधिक है अर्थात् अन्तर सार्थक है। अतः परिकल्पना अस्वीकृत हुई। इस आधार पर कहा जा सकता है कि बी0एड0 स्तर के कला वर्ग के विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि तथा समायोजन के मध्य सार्थक सह–सम्बन्ध होता है।

अध्ययन से प्राप्त निष्कर्ष–

अध्ययनोपरान्त निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुये–

- बी0एड0 स्तर के विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि एवं समायोजन के मध्य सार्थक सह–सम्बन्ध होता है। चूँकि विज्ञान के छात्र वैज्ञानिक विषयों के साथ–साथ सामान्य विषयों का भी अध्ययन करते है जैसे (हिन्दी, अंग्रेजी)। इनमें वैज्ञानिक विषयों जहाँ नियमों पर अधिक जोर दिया जाता है वही भावनात्मक शिक्षा भी दी जाती है जिसका प्रभाव विद्यार्थियों पर पड़ना स्वाभाविक है।
- बी0एड0 स्तर के कला वर्ग के विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि एवं समायोजन के मध्य सार्थक उच्च धनात्मक सह–सम्बन्ध होता है। कला वर्ग के विद्यार्थी विभिन्न मानवीय विषयों का अध्ययन करते है तथा समाज का गहन अध्ययन तथा विश्लेषण करते है इसके कारण इनका सार्थक सह–सम्बन्ध होना लाजिमी है।

बी0एड0 स्तर के विद्यार्थी की संवेगात्मक बुद्धि एवं समायोजन के मध्य सह–सम्बन्ध के अध्ययन की ओर उन्मुख रहा। इस प्रयास में विज्ञान एवं कला वर्ग के विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि तथा समायोजन के मध्य सह–सम्बन्ध को जाँचा गया। समग्र विद्यार्थियों, बालक, बालिका, कला, विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों की संवेगात्मक एवं समायोजन के मध्य सह–सम्बन्ध भी पाया गया। यह स्पष्ट हो चुका है कि संवेगात्मक बुद्धि तथा समायोजन के बीच सह–सम्बन्ध होने से व्यक्ति अपने कार्य में, जीव क्षेत्र में, अत्यधिक सफल हो सकता है तथा एक सम्यक् तथा सुचारू जीवन व्यतीत कर

सकता है। इनके मध्य धनात्मक सह–सम्बन्ध होने से समाज तथा व्यक्ति दोनों को लाभ होता है। व्यक्ति का व्यक्तिगत विकास तो होती ही है साथ ही सामाजिक विकास भी होता है। शिक्षक जो कि समाज का महत्त्वपूर्ण अंग होता है उसकी विशेष जिम्मेदारी बनती है कि वह किशोर विद्यार्थियों को सही दिशा दे वह अपने ज्ञान कोश का सही से प्रचार–प्रसार करें तो आने वाली पीढ़ी देश की उन्नति में उच्चतम योगदान दे सकेगी।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

- गुप्ता, डा0 एस0पी0, गुप्ता, डा0 अल्का (2012), अनुसंधान दिग्दर्शिका, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद।
- लाल, चमन (2014). ए स्टडी ऑफ इमोशनल इंटेलीजेन्श ऑफ शेड्यूल कास्ट स्टूडेन्ट्स इन रिलेशन टू ऐकेडमी एचिवमेन्ट, होम इन्वायर्मेन्ट एण्ड सेल्फ–कन्सेप्ट एट सेकेण्डरी स्कूल, पी.एच–डी. थिथिस, चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ
- नेहरा, सुमन (2014). रिलेशनशिप बिटविन ऐडजस्टमेन्ट एण्ड इमोशनल मैचुरिटी ऑफ IX क्लास स्टूडेन्ट्स, एजुकेशनिया कनफैब, 3(2), पृ0 67–75
- कुमार, सुनील (2014). इमोशनल मैच्युरटी ऑफ एडोल्वसेन्ट स्टूडेन्ट्स इन रिलेशन टू देयर फैमिली रिलेशनशिप. इन्टरनेशनल रिसर्च जर्नल ऑफ सोशल साइंसेन्स. 3(3), 6–8
- गोदती, मनसा, एम. भाग्यलक्ष्मी एवं एस. हेमलता (2015). इमोशनल इंटेलिजेन्स एण्ड ऐकेडिमक स्ट्रेस एमंग एडोल्वसेन्ट ब्वायज एण्ड गर्ल्स. इस्टर्न एकेडमिक जर्नल. 3. 46–51
- चन्द्रन, अर्चना एवं नैयर, बिन्दू पी. (2015). फैमिली क्लाइमेट एस ए प्रेडिकेटर ऑफ इमोशनल इंटेलिजेन्स इन एडोल्वसेन्ट्स. जर्नल ऑफ द इण्डियन ऐकेडिमक ऑफ एप्लाइड सॉइकोलॉजी, 41(1). 167–173
- भट्टाचार्य, फाल्गुनी (2016). एडोल्वसेन्ट्स होम प्रसेप्शन्स ऑफ देयर इमोशनल इंटेलिजेन्स एण्ड सोशल मैच्युरटी. इन्टरनेशनल जर्नल ऑफ होम सांइस, 2(1). 144–150
- मिर्जाहुसैनी, हसन (2016). सर्वेयिंग द रिलेशनशिप ऑफ फैमिली इमोनशनल एटमॉसफियर विथ इमोशनल इंटेलिजेन्स एण्ड हैप्पिनेस ऑफ स्टूडेन्ट्स. द कैसपियन सिस जर्नल, 10(1). सप्लीमेन्ट 4, 07–11
- प्रकाश, अरून एवं विमल, कृष्ण (2016). ए जेण्डर बेस स्टडी ऑफ इमोशनल इंटेलिजेन्स ऑफ शिड्यूल कॉस्ट स्टूडेन्ट्स. इन्टरनेशनल जर्नल ऑफ सोशल साइंस ऑफ इन्टरडिस्पिलिनरी रिर्सच. 5(2). 113–121
- मुनीर. अब्बास (2017). बिग पाइव पर्सनालिटी फैक्टर्स एण्ड इमोशनल इंटेलिजेन्स एमंग यूनिवर्सिटी स्टूडेन्ट्स : ए जेण्डर प्रास्पेक्टिव, इण्टरनेशनल जर्नल ऑफ रिसर्च स्टडीज इन साइकोलॉजी. 7(1). 1–12

Cite this Article: **डा0 विवेक कुमार"संकाय के आधार पर बी0एड0 स्तर के विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि तथा समायोजन के मध्य सह-सम्बन्धk"** *Shiksha Samvad International Open Access Peer-Reviewed & Refereed Journal of Multidisciplinary Research, ISSN: 2584-0983 (Online), Volume 03, Issue 03, pp.84-91, March-2026. Journal URL: https://shikshasamvad.com/*

This is an Open Access Journal / article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution License CC BY-NC-ND 3.0) which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited. All rights reserved.

CERTIFICATE

of Publication

This Certificate is proudly presented to

डॉ0 विवेक कुमार

For publication of research paper title

संकाय के आधार पर बी0एड0 स्तर के विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि तथा समायोजन के मध्य सह–सम्बन्ध

Published in 'Shiksha Samvad' Peer-Reviewed and Refereed Research Journal and E-ISSN: 2584-0983(Online), Volume-03, Issue-03, Month March 2026, Impact Factor-RPRI-3.87.

Dr. Neeraj Yadav
Editor-In-Chief

Dr. Lohans Kumar Kalyani
Executive-chief- Editor

Note: This E-Certificate is valid with published paper and the paper must be available online at: https://shikshasamvad.com/

DOI:- https://doi.org/10.64880/shikshasamvad.v3i3.09